पाठ 15. मूषक सेठ

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह समझाना है कि कोई भी वस्तु बेकार की नहीं होती। प्रत्येक वस्तु का महत्व होता है। हो सकता है जो वस्तु हमारे लिए महत्वपूर्ण नहीं है वह किसी और के लिए बहुत आवश्यक बन जाए।

पाठ का सारांश

एक नगर में बोधिराम नाम का एक युवक अपनी माँ के साथ रहता था। एक दिन वह नगर के सेठ के घर कुछ पैसे उधार माँगने गया। सेठ ने उसे एक मरा हुआ चूहा दिखाया और उसे चुनौती दी कि यदि वह होशियार होगा तो मरे हुए चूहे से भी पैसे कमा लेगा। बोधिराम एक व्यापारी के पास पहुँचा। व्यापारी ने अपनी बिल्ली के लिए उससे वह चूहा ले लिया और बदले में उसे मुट्ठी भर चने दे दिए। चने लेकर वह रास्ते में एक पेड़ के नीचे बैठ गया। उसी रास्ते से एक लकड़हारा लकड़ियाँ काटकर ला रहा था। बोधिराम ने उसे चने दे दिए तथा बदले में उससे कुछ लकड़ियाँ ले लीं। वह उन लकड़ियों को बाज़ार में बेच आया। उनसे जो पैसे मिले उससे चने खरीद लाया। प्रतिदिन यही क्रम अपनाता वह कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी करता और कुछ बेचकर चने खरीदता। ऐसा करते-करते उसने बहुत लकड़ियाँ इकट्ठी कर लीं। जब बरसात का मौसम आया तो जंगल की लकड़ी गीली रहने लगी, तब बोधिराम ने लकड़ियों को बेचा और ढेर सारे पैसे कमाए। फिर उसने एक दुकान खोली। अब लोग उसे मूषक सेठ के नाम से जानने लगे थे।

अध्यापन संकेत

पाठ का वाचन करने से पूर्व बच्चों को पाठ से जोड़ने के उद्देश्य से छोटी-सी पृष्ठभूमि तैयार करें। उन्हें समझाएँ कि हमें कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। निरंतर प्रयास करते रहने से एक न एक दिन सफलता मिल ही जाती है।

- ❖ बच्चों को छोटी से छोटी वस्तु का मोल समझाएँ।
- ❖ बच्चों से पूछें, चूहा बिल्ली से डरता है और बिल्ली किससे डरती है?

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।